M.A. Semester -01
Philosophy CC-03

अरस्तू के अनुसार Form और Matter की संक्षिप्त विवेचना
(पार्ट -I)

प्रो० रागिनी कुमारी
प्रोफेसर एवं
विभागाध्यक्ष
स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र केन्द्र
महाराजा कॉलेज, आरा

Form और Matter की अवधारणा अरस्तू के Metaphysics की दूसरी अवधारणा (सोपान) है। अरस्तू के दर्शन में द्रव्य (Matter) और आकार (Form) दो मूलभूत Categories हैं। द्रव्य और आकार का भेद अरस्तू के कारणता सिद्धान्त पर आधारित है, इसलिए इन दोनों के भेद को जानने के लिए अरस्तू के कारणता सिद्धान्त को जानना आवश्यक हो जाता है।

अरस्तू ने अपने कारणता सिद्धान्त में कारण (cause) और प्रयोजन (Reason) के अन्तर को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। किसी घटना या वस्तु का कारण हमें उसके विषय में 'कैसे' या 'किस प्रकार' का ज्ञान प्रदान करता है। इसके विपरीत प्रयोजन को जान लेने पर हम घटना के विषय में 'क्यों' को जान लेते हैं। प्रयोजन में कारण का अन्तर्भाव हो जाता है पर कारण में प्रयोजन का समावेश नहीं होता। Aristotal के अनुसार कारण वह उपकरण है जिसके माध्यम से प्रयोजन जगत् के व्यापार को प्रभावित करता है। उदाहरणार्थ दुर्घटना या रोग किसी व्यक्ति की मृत्यु का कारण हीं हो सकता है उसका प्रयोजन नहीं। इसी तरह 'क्यों' का उत्तर प्रयोजन से प्राप्त होता है और 'कैसे' का उत्तर कारण से मिलता है। कारण की व्याख्या करने से हीं किसी घटना की यथेष्ट व्याख्या नहीं हो जाती, जबतक कि उसके प्रयोजन की व्याख्या न हो जाये।

अतः अरस्तू ने कारण और प्रयोजन में एक महत्वपूर्ण भेद किया है जिसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। अब अरस्तू किसी नवीन घटना के लिए चार कारण की कल्पना करता है और कहता है कि ये चारो कारण किसी भी वस्तु के निर्माण के लिए आवश्यक है। अतः वस्तु के निर्माण हेतु इन चारो करणों को अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

(1) Material cause, (2) efficient cause, (3) formal cause, (4) final cause.

अरस्तू का कहना है कि ये चारों कारण मिलकर किसी घटना या वस्तु का निर्माण करते हैं। परन्तु अरस्तू इन चारों कारणों की बात में चलकर दो ही रूप दिया है Matter और Form. अरस्तू निमित्त कारण (Efficient cause, स्वरूप कारण और लक्ष्य कारण Formal cause and final cause) को एक कारण के रूप में मान लिया जिसे उन्होंने स्वरूप कारण कहा। उन्होंने कहा कि ये तीनों अलग-अलग नहीं बल्कि एक ही का रूपान्तर मात्र ही है। अरस्तू की यह धारणा है कि स्वरूप कारण किसी वस्तु का 'सार' (Essence) या विज्ञान (Idea) है और लक्ष्य उस Essence यानि स्वरूप का साकार रूप है। अतः ये दोनों एक है। इसी तरह लक्ष्य जो परिणाम स्वरूप है निमित्त कारण के द्वारा ही बना है अर्थात् निमित्त कारण के द्वारा ही स्वरूप वस्तु से लक्ष्य में परिवर्तित होता है। इसलिए अरस्तू का विचार है कि इन तीनों में आपस में समन्वय है, विभेद नहीं।

ऊपर की व्याख्या से यह पता चलता है कि अरस्तू के अनुसार प्रत्येक वस्तु के दो पक्ष हैं (1) द्रव्य और (2) स्वरूप।

अब अरस्तू के अनुसार द्रव्य और स्वरूप की व्याख्या इस प्रकार की गई है।

अरस्तू का कहना है कि साधारण ढंग से देखने पर द्रव्य और स्वरूप में अन्तर दीख पड़ता है परन्तु वास्तविक रूप में इन दोनों में कोई अन्तर नहीं। अरस्तू का कहना है कि अन्तर है भी तो विचार के क्षेत्र में व्यवहार में इन दोनों में कोई अन्तर करना कठिन ही नहीं असम्भव है। अर्थात् हम दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि द्रव्य और स्वरूप का अन्तर सैद्धांतिक है। व्यवहार में ये एक-दूसरे के विपरीत नहीं है, अतः जगत् के प्रत्येक वस्तु, स्वरूप और द्रव्य का मेल है। यहाँ पर लगता है कि अरस्तू का विचार Hegelian विचार से मिलता है। Hegel ने भी इसी तरह के Thesis, Antithesis और Synthesis की बात की थी और उसी से जगत् के विकास के क्रम के बारे में बताया था।

— To be continued —